6

मेरा शिक्षक सब कुछ जानता है– आवश्यकता शिक्षक-प्रशिक्षण की।

अपर्णा पाण्डेय *

विद्यालयों में किसी भी विषय को पढ़ाते समय शिक्षक द्वारा संबंधित विषय को रोचक बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 किसी भी विषय को अंतर्विषयक ढंग से पढ़ाने पर बल देती है। सामाजिक विज्ञान, भाषा तथा कला जैसे विषयों को अंतर्विषयक ढंग से पढ़ाने से विषय के प्रति छात्रों की रुचि भी उत्पन्न होती है और मूल्यपरक शिक्षा को भी पठन-पाठन में भली प्रकार समाहित किया जा सकता है। विभिन्न विषयों जैसे विज्ञान, गणित, भूगोल, भाषा, कला से संबंधित प्रसिद्ध महानुभूतियों के जीवन से जुड़ी रोचक कहानियाँ कक्षा में पठन–पाठन का अंग होनी चाहिए। यह विषय को रुचिकर बनाने में सहायक होती हैं। इसके साथ ही साथ शिक्षकों को अपने विषय में भी पारंगत होना चाहिए। इसके लिए शिक्षकों को पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य विषयों से संबंधित अपनी जानकारी बढ़ाने का निरंतर प्रयास किया जाना चाहिए।

आज फिर रहीम याद आ गए। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा आयोजित ओरिएंटेशन कम रिफ्रेशर कोर्स सितंबर–अक्तूबर 2013 में चल रहा था। सभी सदस्य भाषा के वाद–विवाद में भाग ले रहे थे। तभी एक सदस्य ने कहा रहीम कवि कहते हैं कि 'रहिमन, धागा–प्रेम का मत तोड़ो चटकाए।' रहीम को कवि के साथ संबोधित किया गया था। इसने मुझे अपने विद्यालय के दिनों की याद दिला दी। मैं कक्षा छह की विद्यार्थी थी। घर में ज़ोर–ज़ोर से रहीम का दोहा याद कर रही थी–

''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरे, मोती मानस चून।।''

इसके साथ–साथ इसका अर्थ भी याद करना था। सुबह के छह बज रहे थे, मैं कॉपी हाथ में लेकर आँगन में घूम–घूम कर याद कर रही थी। रहीम दास जी कहते हैं कि पानी

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर* (भूगोल), सा.वि.शि. विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

बहुत महत्वपूर्ण वस्तु होती है। मोती, मनुष्य और चूना इन तीनों का ही जीवन पानी के बिना नहीं चल सकता है। कई बार एक ही वाक्य को आधा-आधा बोलकर याद करने की परंपरा पर मैं अपने आप को पूरी तरह से फिट महसूस करती थी। रहीम ने इस दोहे को लिखने के बाद जितनी बार नहीं पढ़ा होगा उससे ज़्यादा मैंने उस दोहे को याद करने के लिए रट्टा लगाया था। पिता जी दाढ़ी बना रहे थे। अचानक उनका हाथ रुक गया और बोले, ''क्या कहा? रहीम दास नहीं रहीम कहते हैं कि'' तब मैं तुनक कर बोली, ''क्यों? रहीम क्यों? रहीम दास क्यों नहीं?'' पिता जी बोले, ''अरे उनका नाम था अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। वे अकबर के सेनापति थे, बैरम खाँ के बेटे थे। ख़ानख़ाना की तो उनको उपाधि मिली थी। उन्होंने बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ीं थी।'' फिर पिताजी अपने में ही मग्न हो गए और बोले, ''बड़े बहादुर थे भई रहीम।''

तुलसी दास, कबीर दास, सूरदास, बिहारी दास, दोहे लिखने वाले तो दास ही होते हैं। मैं अपनी इस बात पर काफ़ी दृढ़ थी। विद्यालय में उस दिन सभी को दोहा याद करके आना था। मैंने सबसे पहले हाथ उठाया और पूरे मनोयोग से दोहा सुनाया और उसका अर्थ भी विस्तार से बताया। मैंने रहीम दास जी कहते हैं कहा और शिक्षिका ने एक बार भी नहीं टोका तो मैं निश्चिंत हो गई और फिर कई-कई बार रहीम दास जी का नाम दोहराया। हिंदी की अध्यापिका मेरी इस दक्षता से काफी खुश हुई। उन्होंने कहा रहीम दास जी ने बड़े ही उत्कृष्ट कोटि के दोहे लिखे हैं। रहीम दास जी की गणना हिंदी के श्रेष्ठ कवियों में होती है। इस तरह अब मैंने ठंडी साँस ली कि अच्छा किया मैंने रहीम नहीं कहा, अब्दुर्रहीम खानखाना नहीं कहा। नहीं तो मेरे तो नंबर ही कट जाते। रहीम दास जी ही हमें कक्षा छठवीं से बारहवीं तक हिंदी में पास कराते आए, लेकिन इस समय यह बात बिल्कुल समझ में नही आ सकी कि इसने एक बच्चे को यह समझने नहीं दिया कि एक ही व्यक्ति कई कलाओं में पारंगत हो सकता है। रहीम एक ऐसा ही व्यक्तित्व था जिसने बहादुर सिपाही होने के साथ-साथ उत्कृष्ट कोटि की रचना भी की थी। हिंदी की शिक्षिका द्वारा कक्षा में ऐसा बताना इसलिए ज़रूरी था क्योंकि इससे बच्चों की भी रुचि विषय की पाठ्यचर्या के साथ-साथ सहपाठ्यचर्या के कार्यकलापों में उत्पन्न की जा सकती है। कला, संगीत, नाटक, नृत्य सीखने का मतलब उसको अपनी आजीविका बनाना ही नहीं है। विद्यार्थियों को विभिन्न उदाहरणों के द्वारा जानकारी दी जानी चाहिए कि आप एक अच्छे वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट कोटि के कलाकार भी हो सकते हैं।

इसलिए शिक्षिका के लिए यह आवश्यक था कि रहीम के काव्य को पढ़ाते समय वह उनके व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डालती। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 सभी विषयों को अंतर्विषपक ढंग से पढ़ाए जाने पर ज़ोर देती है, यह किसी विषय को एक निश्चित दायरे में बाँधने का विरोध करती है। काव्य जिस युग में लिखा गया उस पर भी चर्चा की

जानी चाहिए थी। मुगल काल में रहीम और तुलसी समकालीन थे। उस समय सामाजिक दशा कैसी थी। सामाजिक विज्ञान विषय की विषय सामग्री सामाजिक संबंधों, समानताओं, विषमताओं उनके कारणों और निदान पर ही निर्भर करती है। चाहे ये विषय इतिहास, भूगोल, राजनीति विज्ञान या अर्थशास्त्र जो भी हों। रहीम और तुलसी के सौहार्द्रपूर्ण संबंधों के बारे में हमने प्रो. एम. एच. कुरैशी (अवकाश प्राप्त), सांस्कृतिक भूगोल के विशेषज्ञ, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालयए से सुना है कि तुलसी ने रहीम से कहा था–

'ऐसी देनी देत जू, कित सीखे ये सैन।
ज्यों-ज्यों कर ऊँचो करयों, त्यों-त्यों नीचे नैन।।'

तब रहीम ने उसका उत्तर दिया था–

'देनहार कोउ और है, देवत है दिन रैन।
लोग भ्रम मोपे करैं, तासो नीचो नैन।।'

इस प्रकार की चर्चा चाहे इतिहास में मुगल काल पढ़ाया जा रहा हो या भाषा की कक्षा में तुलसी या रहीम पढ़ाए जा रहे हों शिक्षक से यह अपेक्षित है कि इस तरह की रोचक तथा सामाजिक सौहार्द्र का संदेश देने वाली कहानियाँ विषय के पठन-पाठन में समाहित करें। ऐसी शिक्षण पद्धति विद्यार्थियों की विषय में रुचि तो उत्पन्न करती ही है, साथ ही साथ मूल्यपरक शिक्षा को भी विषय के साथ जोड़ने का काम करती है।

इसी प्रकार भारत और विश्व के अनेक व्यक्तित्व पर भी चर्चा की जा सकती है जैसे लियोनार्डो द विंसी, जो उत्कृष्ट कोटि के वैज्ञानिक, लेखक, कलाकार और ओलंपिक खिलाड़ी भी थे। हमारे भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए. पी. जे. कलाम वैज्ञानिक होने के साथ-साथ वीणा बजाना भी जानते हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. के. राधाकृष्णन प्रख्यात वैज्ञानिक होने के साथ-साथ कर्नाटक संगीत और कथकली में भी रुचि रखते हैं। कहानी के माध्यम से विषय को रुचिकर बनाकर अधिक प्रभावी ढंग से कक्षा अध्यापन कार्य किया जा सकता है, ऐसा अनेक शोधों द्वारा भी सिद्ध हो चुका है। आज मुझे अहसास होता है मेरे तो बहुत ज़्यादा नंबर कट चुके थे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 कला, नृत्य, संगीत, नाटक आदि को पाठ्यचर्या से इतर नही मानती वरन् इसको सह-पाठ्यचर्या के अंतर्गत सम्मिलित करने पर ज़ोर देती है। किसी भी संकल्पना को जैसे अर्थशास्त्र में उपभोक्ता के हक को समझाने के लिए इसको एक नाटक का रूपांतर देकर समझाया जा सकता है। कक्षा को समूह में बाँटकर हर किसी को नाटक में एक पात्र की भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जैसे- ग्राहक, दुकानदार, न्यायाधीश, वकील, पुलिस आदि। इसके लिए अलग से किसी मंच की आवश्यकता नहीं होती है। शिक्षण कार्य के दौरान ऐसे शिक्षक भी बच्चों के साथ अपनेपन का अहसास स्थापित कर पाता है। आखिर क्या कारण है कि नृत्य कला या फिर खेल के शिक्षक बच्चों के ज़्यादा समीप हो जाते हैं। वैसा आत्मीय संबंध विज्ञान, गणित या भूगोल के शिक्षक के साथ स्थापित नहीं हो पाता है।

नृत्य का शिक्षक अपने विद्यार्थी के साथ नृत्य करता है। खेल का शिक्षक अपने विद्यार्थी के साथ खेलता है इसलिए छात्र उन कलाओं और खेल में पारंगत भी होते जाते हैं। विषय के शिक्षक जब विद्यार्थी के साथ-साथ ही पठन-पाठन में उतना आनंद लेंगे जैसे विभिन्न कलाओं के शिक्षक अपने शिष्यों के साथ लेते हैं, तभी हम अपने विद्यार्थियों की अन्य विषयों में रुचि उत्पन्न करने में मदद कर सकते हैं।

इस रिफ्रेशर कोर्स के ही दौरान में एक टीचर एजुकेटर की हैसियत से अंग्रेज़ी माध्यम के एक विद्यालय में कक्षा को निरीक्षण कर रही थी। हिंदी की ही कक्षा थी। कक्षा नौ में पाठ ''वैज्ञानिक चेतना के वाहक'' पढ़ाया जा रहा था। यह पाठ नोबल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक सी.वी. रमन पर आधारित था। शिक्षिका बार-बार सी.वी. रमन को सी. वी. रामन कह कर पुकार रहीं थी। एक-एक विद्यार्थी को एक-एक पैराग्राफ़ ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना था। फिर शिक्षिका उसका अर्थ बताती थी। एक विद्यार्थी को कुछ शब्द जैसे 'प्रतिष्ठित' तथा 'शैक्षणिक' पढ़ने में दिक्कत हुई तो शिक्षिका ने ज़ोर से कहा Poor Reading, Sit down इस तरह किसी छात्र को अपमानित करते समय शायद शिक्षिका को हमारी उपस्थिति का अहसास नहीं था या फिर उसने जानबूझ कर अपनी रौबदार स्थिति को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया। इस घटना के बाद की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी जिस छात्र को पूरी कक्षा के सामने इस प्रकार अपमानित किया गया था उसका मन विषय से उचट गया था। अगर भविष्य में ऐसा क्रम लगातार जारी रहा तो उसकी विषय के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाएगी और विद्यालय द्वारा छात्र को उस विषय में कमज़ोर घोषित कर दिया जाएगा। शिक्षक तो ऐसा होना चाहिए जो अपने छात्रों के मनोभावों को समझता हो। उनकी कुशलता व अकुशलता का आकलन कर सकता हो। बच्चों की कमज़ोरी का तमाशा न बनाता हो। यहाँ हिंदी भाषा-भाषी प्रदेश में अंग्रेज़ी माध्यम से हिंदी पढ़ाने का यह एक अक्षम्य अपराध किसी शिक्षक द्वारा किया जा रहा था और कक्षा 'रामन' जैसे श्रेष्ठ वैज्ञानिक के नाम के साथ ही समाप्त हो गई।

ऐसा करते समय हम शिक्षक कहीं यह भूल जाते हैं कि बच्चों के लिए अपना शिक्षक ही आदर्श होता है। अपने माता-पिता चाहे जितने भी पढ़े-लिखे, विद्वान हों, बच्चों के लिए शिक्षक की बताई हुई बातें ही ब्रह्म वाक्य होती हैं। ऐसी अगाध-श्रद्धा रखने वाले बच्चों की पढ़ाई-लिखाई का भार हमारे ऊपर है तो क्यों न हम शिक्षक अपने आपको नई जानकारियों से पूर्ण रखने का प्रयास करें। बच्चों के मनोभावों को समझने का प्रयास करें। स्वाध्याय जीवन पर्यन्त चलना चाहिए, इस को ध्यान में रखकर हर समय कुछ नया सीखने के लिए तत्पर रहें। तभी हम अपने भावी नागरिकों को गुणात्मक शिक्षा दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

❑❑❑